RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, द्वितीय अंक

मई - जून 2021

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र में ग्रहणफल	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा	05
2.	भारतीय वास्तुशास्त्र और बहुमंजिले भवन	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	10
3.	श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य विभूतियों की समीक्षा	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	17
4.	अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्तर्गत मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण	डॉ. उष्मा यादव	23
5.	आदिकाव्य रामायण में वर्णित सामाजिक उपदेश	डॉ. दीप लता	29
6.	आस्तिकदर्शनों की एकरूपता	डॉ. विवेक शर्मा	33
7.	कालिदास की शैक्षिकदृष्टि	डॉ. अनिल कुमार	36
8.	रामचरितमानस और तुलसीदास की दार्शनिक स्थापनाएँ	डॉ. राजेश कुमार	40
9.	महाभारतकालीन मिथक का आधुनिक-प्रयोग : 'अंधायुग'	डॉ. अनिल शर्मा	43
10.	भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में सांस्कृतिक संदर्भ	डॉ. सरिता	48
11.	एक थे आग़ा हश्र कश्मीरी	डॉ. आशा, डॉ. अनिल शर्मा	51
12.	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में योग शिक्षा	डॉ. मनोज प्रसाद नौटियाल डॉ. दीवान सिंह राणा	55
13.	भारत निर्माण तथा शिक्षा का माध्यम : हिंदी भाषा का महत्व और प्रगतिशील भारत में उसका योगदान	डॉ. प्रियंका सिंह निरंजन डॉ. जिप्सी मल्होत्रा	60
14.	गाँधी जी का सर्वोदयदर्शन एवं वर्तमान चुनौतियां	डॉ. किरन बाला	64
15.	महाकवि कालिदास का पर्यावरणीय चिन्तन	डॉ. शिवदत्त आर्य	67
16.	शिक्षा एवं वेद	डॉ. सुमन कुमारी	72
17.	हिन्दी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	75
18.	यशोधरा में नारीवादी दृष्टिकोण	डॉ. कुसुम नेहरा	81
19.	भारतीय साहित्य में आदिवासी विमर्श	डॉ. रश्मि शर्मा	84
20.	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और अधिगम	डॉ.अनूप कुमार पाण्डेय	88
21.	पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षा अधिकार अधिनियम (2009) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. आलोक शर्मा डॉ. आशीष कुमार बाजपेयी	93
22.	भवभूति प्रणीत नाटकों में 'वर्ण वर्ग' संबद्ध कविसमयानुशीलन	डॉ. वर्षा खण्डेलवाल	99
23.	श्रुति स्मृतियों में नारी का स्थान	डॉ. इतिश्री महापात्र	104

ISSN 2278 - 0327

24.	भारत की सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विरासत संस्कृत क्यों पढ़ी जानी चाहिए	डॉ. मोना शर्मा	107
25.	वैदिक साहित्य में ऋत एवं सत्य की अवधारणा	डॉ. प्रवीण बाला	111
26.	तैत्तिरीयोपनिषद् में आचार संहिता और आचार्य-शिष्य परम्परा	डॉ. सुमन रानी	114
27.	'वामनचरितम्' में प्रकृति सौन्दर्य	डॉ. नीरज शर्मा	117
28.	संस्कृत साहित्य और आयुर्वेद	डॉ. विशाल भारद्वाज	120
29.	सिद्धहेमचन्द्र : संक्षिप्त परिचय	डॉ. ज्योति शर्मा	124
30.	करोना और ज्योतिष विज्ञान	ओम प्रकाश अरोड़ा	127
31.	समकालीन हिंदी कविता के विकास में अस्मितामूलक विमर्शों की भूमिका	प्रदीप कुमार ठाकुर	130
32.	मैत्रायणीय आरण्यक में षडङ्ग योग	नितिन कुमार गावकरे	133
33.	शिशुपालवधम् और नैषधीयचरिम् में वर्णित राजा के कर्त्तव्य	रामवीर	136
34.	वृक्षायुर्वेद में वृक्ष-व्याधि दोष व चिकित्सा	प्रियंका देवी	141
35.	भीष्मचरितम् महाकाव्यम् में वर्णित सांस्कृतिक मूल्य	तृप्ति शर्मा	144
36.	उपसर्गों का द्योतकत्त्व एवं वाचकत्त्व यास्कीय निरुक्त के परिप्रेक्ष्य में	संदीप	148
37.	किशोरावस्था में आत्महत्या की प्रवृत्ति एवं मानसिक असन्तुलन का अध्ययन	कल्पना जैन प्रो. बनवारी लाल जैन	153
38.	हाईस्कूल स्तर की छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन	राजलक्ष्मी प्रो. (डॉ.) मोहन सिंह पंवार	158
39.	आनन्दरामायण में विष्णु के दशावतार	सुमन देवी	162
40.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	अशोक कुमार किस्कू ऋतु शेखर	165
41.	अलंकारप्रयोग के निकष पर राजेन्द्रकर्णपूर : एक विश्लेषण	संदीप कुमार यादव	170
42.	किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन	प्रतिभा गोयल डॉ. किरण मिश्रा	174
43.	नैषधप्रकाश टीका में व्याकरण द्वारा विशिष्ट काव्यार्थ की उद्भावना	कृष्ण आर्य	178
44.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन	नगनारायण उपाध्याय प्रो. सुनीता गोदियाल	182
45.	ऋग्वेद में वाग्ब्रह्म	कृष्णकान्त सरकार	187
46.	रामायण में वर्णित अस्त्र-शस्त्र	सोरन सिंह	190
47.	मत्स्यपुराण में राजभवन वर्णन	कन्हैया कुमार झा	195
48.	प्राचीन कालीन स्त्रियों का स्वरूप	रिंकू कुमार जैन	198
49.	आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाएँ	शेष नाथ मिश्र	201
50.	संवेगात्मक बुद्धि के विविध आयाम	दीपक कुमार पाठक	209

ISSN 2278 - 0327

आस्तिकदर्शनों की एकरूपता

डॉ. विवेक शर्मा
सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रिय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सार- सम्पूर्ण विश्व में भारत की जो आध्यात्मिक ख्याति है, उसका सबसे बड़ा कारण है-भारतीय दर्शन। स्थूल रूप से भारतीय दर्शन को दो भागों में बांटा जाता है- आस्तिकदर्शन एवं नास्तिकदर्शन। नास्तिक तथा आस्तिक दर्शनों में परस्पर पर्याप्त विरोध है। इन आस्तिक दर्शनों के मूल सिद्धान्तों का विश्लेषण करें तो इनमें कोई सैद्धान्तिक विरोध नहीं है। अपितु इन विविध दर्शनों द्वारा विविध प्रकार से जो परम आत्म तत्त्व तथा सृष्टि के रहस्यों को समझाने का प्रयास किया गया है, वह नि:सन्देह अलौकिक है। समस्त छ: आस्तिक दर्शनों में परस्पर विरोध नहीं है अपितु परस्पर सामञ्जस्य ही हमें दृष्टिगोचर होता है, जैसे कि मीमांसादर्शन में बतलाया गया है कि इस जगत् में कुछ भी ऐसा कार्य नहीं है जिसके निर्माण में कोई चेष्टा न हो। इन सब दर्शनों के अन्य तथ्यों पर भी यदि विचार करें तो इनका अपृथकत्व दृष्टिगोचर होता है, जैसै- जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्ष। इस तरह सभी दर्शनों में इन सब तत्त्वों पर विस्तृत विचार किया गया है। शब्द में भेद अवश्य हो सकता है लेकिन मोक्ष के भाव का प्रतिपादन सभी आस्तिक दर्शनों ने समान रूप से किया है। अत: सार रूप से यही कहा जा सकता है कि सभी आस्तिक दर्शनों में विरोधभास मात्र है, उनमें विरोध कभी नहीं है। केवन इन दार्शनिक तथ्यों को सभी ने अपने अपने ढंग से उपस्थापित किया है।

मुख्य शब्द -आस्तिक, मूलसिद्धान्त, विश्लेषण, दर्शन, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्ष।

सम्पूर्ण विश्व में भारत की जो आध्यात्मिक ख्याति है, उसका सबसे बड़ा कारण है-भारतीय दर्शन। वस्तुत: सम्पूर्ण विश्व के दार्शनिक चिन्तनों में भारतीय दर्शन अग्रगण्य एवं शिरोमणि है। स्थूल रूप से भारतीय दर्शन को दो भागों में बांटा जाता है- आस्तिकदर्शन एवं नास्तिकदर्शन। दर्शन शास्त्र का यह विभाजन वेद, आत्मा अथवा ब्रह्म के प्रति उस दर्शन विशेष की प्रवृत्ति, श्रद्धा या दृष्टिकोण पर आधारित है। जिस दर्शन में वेद की निन्दा की गई है उसे नास्तिक दर्शन कहा गया एवं जिस दर्शन में वेद के प्रति निष्ठा दर्शायी गई है उसे आस्तिक दर्शन की कोटी में रखा गया है।[1] नास्तिक दर्शन में चार्वाक बौद्ध तथा जैनदर्शन हैं। जबकि न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा तथा वेदान्तदर्शन को आस्तिक दर्शन कहा जाता है। इस तरह तीन नास्तिकदर्शन एवं छ: आस्तिकदर्शन कुल नौ दर्शन हमारे संस्कृत वाङ्मय में प्रसिद्ध हैं। बौद्ध दर्शन के प्रकारान्तर से से चार विभागों को संयोजित कर नास्तिक दर्शनों की संख्या छ: मानी जाती है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशिष्टता यह है कि भारतीय दार्शनिक परम्परा का नितान्त सहिष्णु दृष्टिकोण है। इन दर्शनों की इस प्रवृत्ति का ज्ञान इसी बात से होता है कि यहाँ वैदिक संस्कृति के चार्वाक दर्शन जैसे घोर विरोधी दर्शन को भी समान रूप से एक दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। विरोधी होने के कारण उसे नष्ट नहीं किया गया।

नास्तिक तथा आस्तिक दर्शनों में परस्पर पर्याप्त विरोध है। दर्शनों के सन्दर्भ में विरोध की बात की जाये तो एक ही कर्म में अथवा एक ही विषय में दर्शनों का परस्पर विरोध का भाव ही विरोध कहलाता है। लेकिन छ: आस्तिक दर्शनों में परस्पर विरोध बिल्कुल भी नहीं है। यद्यपि सर्वशक्तिमान परमात्मा और इस सृष्टि के प्रतिपादन में शब्दान्तर द्वारा पृथक्-पृथक् रूप में करने के कारण कुछ विद्वान् मानते हैं कि ये सब दर्शन परस्पर विरोधी हैं। किन्तु वस्तुत: इन आस्तिक दर्शनों के मूल सिद्धान्तों का विश्लेषण करें तो इनमें कोई सैद्धान्तिक विरोध नहीं है। अपितु इन विविध दर्शनों द्वारा विविध प्रकार से जो परमात्म तत्त्व तथा सृष्टि के रहस्यों को समझाने का प्रयास किया गया है, वह नि:सन्देह अलौकिक है।

दर्शन शास्त्र के शिरोमणि महर्षि दयानन्द ने इस सन्दर्भ में प्रतिपादित करते हुये सत्यार्थप्रकाश के तृतीयोल्लास में कहा है कि जैसे घटनिर्माण में कर्म, समय, मृत्तिका का संयोग-वियोगादि पुरुषार्थ, अग्नि ताप, कुम्भकार इत्यादि कारण हैं, वैसे ही सृष्टि का जो कर्म-कारण है, उसकी व्याख्या मीमांसादर्शन में, समय की व्याख्या वैशेषिक दर्शन में, उपादानकारण की व्याख्या न्यायदर्शन में, पुरुषार्थ की व्याख्या योगदर्शन में, तत्त्वों का परिगणन या

उनकी व्याख्या सांख्यदर्शन में, निमित्त कारण जो कि ईश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्तदर्शन में की गई है। यहाँ इनमें किसी भी प्रकार का विरोध नहीं है । वैद्यक-शास्त्र में जैसे निदान, चिकित्सा, औषधि देना, पथ्य आदि सब प्रकरण पृथक्-पृथक् कहे गए हैं, किन्तु सभी का लक्ष्य रोगनिदान ही है। उसी प्रकार सृष्टि के उक्त छः कारण हैं। प्रत्येक कारण की व्याख्या शास्त्रों के द्वारा की गई है। अतः यहाँ कोई भी विरोधिता नहीं है।

समस्त छः आस्तिक दर्शनों में परस्पर विरोध नहीं अपितु परस्पर सामञ्जस्य ही हमें दृष्टिगोचर होता है, जैसे कि मीमांसादर्शन में बतलाया गया है कि इस जगत् में कुछ भी ऐसा कार्य नहीं है जिसके निर्माण में कोई चेष्टा न हो। वैशेषिकदर्शन में कुछ भी कार्य परिस्थिति से ही निर्मित होता है। न्यायदर्शन के अनुसार उपादानकारण के बिना कुछ भी कार्य हो ही नहीं सकता। सांख्य-योग दर्शन में तत्त्वों के संयोग के बिना कार्य नहीं हो सकता। वेदान्तदर्शन के अनुसार भी निर्माता की निर्मिति के बिना पदार्थोत्पत्ति सम्भव नहीं है। इस प्रकार इन दर्शनों में सृष्टि को छः पदार्थों के द्वारा निर्मित दिखलाया गया है। अतः सृष्टि रूपी कार्य की व्याख्या छः प्रकार के दर्शनकारों ने की है अतः इन सब में पृथकता कदापि नहीं मान सकते। इन सब दर्शनों के अन्य तथ्यों पर भी यदि विचार करें तो इनका अपृथकत्व दृष्टिगोचर होता है, जैसै-

जीवात्मा - जीवात्मा में भी सभी आस्तिक दर्शन प्रवर्तकों की स्वीकृति हमें दृष्टिगोचर होती है। सभी दर्शनकारों ने जीवात्मा को नित्य, अल्पज्ञ, एकदेशी, कर्मफलभोक्ता माना है। वास्तव में जीव और ब्रह्म एक पदार्थ नहीं हैं। वैदिक वाङ्मय में भी जीवात्मा और परमात्मा के भेद का प्रतिपादन किया गया है।[2] वेद में जीवात्मा के अनित्य होने को स्वीकार नहीं किया गया है। कहा गया है कि इसके जन्म-मरण विषय की श्रुति उपलब्ध नहीं होती[3]। जिस तरह वेद ने जीवत्मा के नित्यत्व को प्रतिपादित किया है उसी प्रकार मीमांसा दर्शन में भी जीवात्मा के नित्यत्व को स्वीकृत किया गया है।[4] इन दोनों की अपृथकता को उपस्थापित करते हुये महर्षि कणाद कहते हैं कि ब्रह्म की अनवरत उपासना से जीवात्मा आनन्दमय होता है।[5] शरीर दाह से पाप नहीं होता है, महर्षि गौतम के इस वचन से जीवात्मा के नित्यत्व की सिद्धि हो जाती है।[6] सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष के अतिरिक्त सब अनित्य बतलाया गया है।[7] वस्तुतः यहाँ प्रकृति जीवात्मा एवं पुरुष परमात्मा ही है। योगदर्शन के प्रवर्तकाचार्य महर्षि पतञ्जलि ने भी जीवात्मा को नित्य बतलाया है।[8] इस तरह कहा जा सकता है कि सभी दर्शनशास्त्रों के प्रवर्तकाचार्यों ने जीवात्मा के नित्यत्व को पूर्णतः अङ्गीकृत किया है। इस विषय में किसी में भी परस्पर विरोध नहीं है।

प्रकृति- दर्शन शास्त्र में प्रकृति एक नित्य पदार्थ है। जीव और ब्रह्म की तरह प्रकृति की भी स्वतन्त्र सत्ता है। अचेतन प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। निमित्त एवं उपादान दोनों कारणों के वेद में प्रतिपादन से यह सिद्ध हो जाता है कि जगत् का निमित्त कारण ब्रह्म एवं उपादान कारण प्रकृति ही है।[9] सभी आस्तिक दर्शनों में जीव को भोक्ता, परमात्मा को निमित्तकारण एवं प्रकृति को उपादनकारण स्वीकार किया गया है। महर्षि कणाद ने भी जगत् का उपादान कारण प्रकृति को ही माना है।[10] सांख्यसूत्रकार ने तो प्रकृति की सत्ता को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया ही है।[11] इस तरह कहा जा सकता है कि प्रकृति के विषय में सभी दर्शनकारों में मतभेद नहीं है।

ईश्वर - जीवात्मा की ही तरह ईश्वर के विषय में भी सभी आस्तिक दर्शनकारों की स्वीकारोक्ति दृष्टिगोचर होती है। सर्वप्रथम मीमांसा दर्शन की बात करें तो बहुत से भाष्यकारों का कहना है कि इस दर्शन में ईश्वर की सत्ता का खण्डन किया गया है। किन्तु ऐसा कहना भी उचित नहीं है क्योंकि मीमांसा दर्शन में भी स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है कि शास्त्रज्ञान देवता अथवा ईश्वर के आश्रय के बिना प्राप्त ही नहीं किया जा सकता है।[12] वेदान्तदर्शन में मुख्य रूप से 'ब्रह्म' तत्त्व पर ही प्रधानतया विचार किया जाता है। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही जगत् का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता और विनाशकर्ता है।[13] न्यायदर्शन में कई बार मानव कर्म फलविफलत्व दर्शन से निश्चय से ईश्वर का फलप्रदातृत्व ही सृष्टि के कारण के रूप में परिलक्षित होता है।[14] जिससे इस दर्शन में भी ईश्वर की सत्ता अङ्गीकृत की गई है। *तद्वचनाम्नायस्य प्रामाण्यम्*[15] ऐसा कहकर महर्षि कणाद ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित किया है। बहुत से विश्लेषक ऐसा मानते हैं कि सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल एक नास्तिक दार्शनिक थे, क्योंकि वे ईश्वर को मानते नहीं थे। किन्तु उनका ऐसा मानना ठीक नहीं है क्योंकि यदि महर्षि कपिल का ईश्वर में विश्वास नहीं था तो वे भला *स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता*[16] इस तरह कहकर जगत् के सन्दर्भ में ईश्वर के ही कृतित्व[17] को स्वयं क्यों प्रतिपादित करते? साथ ही उन्होंने कहा कि इस तरह के सृष्टिकर्ता परमात्मा की सिद्धि तो सिद्ध ही है।[18] महर्षि कपिल के इन दोनों वाक्यों के आधार पर डकें की चोट पर कहा जा सकता है कि वे पूर्णतः आस्तिक थे और ईश्वर की सत्ता को वे स्वीकार करते थे। योग दर्शन का स्पष्ट रूप से कहना है कि ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण भाव रखने से समाधि

लाभ होता है[19] इस तरह योगदर्शन में निर्देशित करके योगसूत्रकार पतञ्जलि ने भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकृत किया है। अत: हम कह सकते हैं सभी आस्तिक दर्शनशास्त्रों के प्रवर्तकाचार्यों ने ईश्वर की सत्ता को अपने अपने तरीके से उपस्थापित करके अपनी परस्पर एकता को दर्शाया है। साथ ही सभी दर्शनकारों ने ईश्वर को शरीरेन्द्रियविरहित, सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा, सर्वसाक्षी एवं कर्मफलप्रदाता के रूप में उपस्थापित किया है। अत: ईश्वर के सन्दर्भ में इन सब आस्तिक दर्शनों की किसी भी तरह की विरोधिता नहीं है। उक्त विश्लेषण से इन सब दर्शनों की आस्तिकता भी सिद्ध हो ही जाती है।

पुनर्जन्म– मृत्यु के पश्चात् शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि के साथ जीवात्मा के सम्बन्ध को पुनर्जन्म कहते हैं।[20] पुनर्जन्म का कई दर्शनों में पर्याप्त विवेचन किया गया है। योगसूत्रकार महर्षि पतञ्जलि का मत है कि विवेकशील पुरुष भी मरने से डरता है और वह मृत्यु की इच्छा नहीं करता है, यह अभिनिवेश ही 'पुनर्जन्म' का साधक होता है।[21] पुनर्जन्म के सिद्धान्त को महर्षि कपिल ने भी अनुमोदित किया है और कहा है कि सत्त्व प्रधान पुरुष उच्च योनियों में जन्म गृहण करते हैं। तमो गुण से युक्त तिर्यक् – स्थावरादि निम्न योनियों में जन्म लेते हैं एवं रजो गुण युक्त जीव मध्यम योनियों को प्राप्त होते हैं।[22] सभी दर्शनकारों का इस बात में मतैक्य है कि मानव के शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही उसका पुनर्जन्म होता है। 'अपने कर्मों के अनुसार ही जीव शुभाशुभ फल एवं दूसरा शरीर प्राप्त', ऐसा कहकर कणाद ने भी पुनर्जन्म सिद्धान्त को स्वीकार किया है, साथ ही कहा है कि शुभाशुभ कर्मों के अभाव में जीव का पुनर्जन्म नहीं होता और पुनर्जन्म का यही अभाव ही मोक्ष कहलाता है।[23] इस तरह पुनर्जन्मवाद भी सभी आस्तिक दर्शनकारों को पूर्णत: स्वीकार्य है।

मोक्ष– जन्ममरणादि दु:खों से सर्वकालिक विमुक्ति ही मोक्ष कहलाती है।[24] जीव दु:खों से मुक्ति प्राप्त कर ब्रह्मानन्द का अनुभव करता है।[25] न्याय दर्शन में महर्षि गौतम लिखते हैं कि सोलह पदार्थों के तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।[26] सांख्यदर्शन में कहा गया है कि जब त्रिविध दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति हो जाती है वही पुरुषार्थ (मोक्ष) है।[27] महर्षि पतञ्जलि ने दु:खों के अभाव एवं ब्रह्मानन्द की प्राप्ति को मोक्ष कहा है।[28] वस्तुत: योगदर्शन मे मोक्ष हेतु कैवल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। योग दर्शन में प्रतिपादित किया गया है कि कर्मों की वासना आत्मा को आवागमन के दुश्चक्र में डाल देती है। इस स्थिति में विवेक ख्याति के द्वारा वैराग्य से दोषों के बीज क्षय होने पर कैवल्य होता है।[29] इस तरह सभी दर्शनों में मोक्ष पर विस्तृत विचार किया गया है। यहाँ शब्दों में भेद अवश्य हो सकता हैं लेकिन मोक्ष के भाव का प्रतिपादन सभी आस्तिक दर्शनों ने समान रूप से किया है। अत: सार रूप से यही कहा जा सकता है कि सभी आस्तिक दर्शनों में विरोधभास मात्र है, उनमें विरोध कभी नहीं है। केवन इन दार्शनिक तथ्यों को सभी ने अपने-अपने ढंग से उपस्थापित किया है।

सन्दर्भ सूची –

1. योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्रश्रयाद् द्विज: ।
   स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दक: ॥ मनुस्मृति:, 2/11
2. भेदव्यपदेशाच्च। वेदान्तदर्शनम्, 1 / 1 / 17
3. नात्माऽश्रुतेर्नित्यत्वाच्च ताभ्य:। वेदान्तदर्शनम्, 2 / 3 / 17
4. नित्यत्वाच्चानित्यैर्नास्ति सम्बन्ध:। मीमांसादर्शनम्, 6 / 7 / 5
5. आनन्दमयोभ्यासात्। वैशेषिकदर्शनम्, 10 / 1 / 12
6. शरीरदाहे पातकाभावात्। न्यायदर्शनम्, 3 / 1 / 4
7. प्रकृतिपुरुषयोरन्यत्। सांख्यदर्शनम्, 5 / 68
8. सदाज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभो: पुरुषस्यापरिणामित्वात्। योगदर्शनम्, 4/18
9. साक्षाच्चोभयाम्नानात्। वेदान्तदर्शनम्, 1 / 4 / 25
10. सदकारणवान्नित्यम्। वैशेषिकदर्शनम्, 4 / 1 / 1
11. सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति:। सांख्यदर्शनम्, 1 / 26
12. देवताश्रये च। मीमांसादर्शनम्, 6 / 2 / 19
13. जन्माद्यस्य यत:। वेदान्तसूत्रम्, 1 / 1 / 2
14. ईश्वर:कारणं पुरुषफल्यदर्शनात्। न्यायदर्शनम्, 4 / 1 / 19
15. वैशेषिकदर्शनम्, 1 / 1 / 3
16. सांख्यदर्शनम्, 3 / 56
17. सांख्यदर्शनम्, 3 / 56
18. ईदृशेश्वर सिद्धि: सिद्धा। सांख्यदर्शनम्, 3 / 57
19. ईश्वरप्रणिधानाद्वा। योगदर्शनम्, 1 / 23
20. पुनरुत्पत्ति: प्रेत्यभाव:। न्यायदर्शनम्, 1 / 1 / 19
21. स्वरसवाही विदुषोपि तन्वन्बन्धोभिनिवेश:। योगसूत्रम्, 2 / 9
22. ऊर्ध्वं सत्त्वविशाला:। सांख्यदर्शनम्, 3 / 48 ; तमोविशाल मूलत: । सांख्यदर्शनम्, 3 / 49 ; मध्ये रजोविशाला:। सांख्यदर्शनम्, 3 / 50
23. कृतप्रयत्नापेक्षस्तु विहितनिषिद्धावैयर्थ्यादिभ्य:। वैशेषिकदर्शनम्, 2/3/42
    तदभावे संयोगाभावोप्रादुर्भावश्च मोक्ष: । वैशेषिकदर्शनम्, 5 / 2 / 18
24. तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्ग:। न्यायदर्शनम्, 1 / 1 / 22
25. ब्राह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्य:। वेदान्तदर्शनम्, 4 / 4 / 5
26. प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्प-वितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निश्रेयसाधिगम:। न्यायदर्शनम्, 1/1/1
27. सांख्यदर्शनम्, 1 / 1
28. पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसव: कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति । योगसूत्रम्,4 / 34
29. योगदर्शनम्, 2 / 12, 25, 34